जनता शिक्षण संस्था संचलित,

किसन वीर महाविद्यालय, वाई

हिंदी विभाग

अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, २०१७

डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर : विचारधारा और हिंदी कथेत्तर साहित्य

ISBN : 978-93-83796-45-8

संपादक

प्रा. डॉ. भानुदास आगेडकर

प्रा. डॉ. संतोष कोळेकर

अनुक्रम...

१	डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर : विचारधारा और हिंदी कविता	डॉ. प्रकाश मोकाशी	१
२	डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर : विचारधारा और हिंदी कविता	डॉ. भरत सगरे,	२
३	२१ वी सदी की कविता और डॉ. आम्बेडकर के विचार	डॉ. सौ. शोभा पवार	६
४	डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर : विचारधारा और हिन्दी कविता	डॉ. समीर सय्यद	९
५	हिंदी कविता पर डॉ. आम्बेडकर का प्रभाव	डॉ. अलका निकम–वागदरे	१०
६	आम्बेडकरवादी संस्कृति की पुरजोर हिमायत करता 'स्नेही' का काव्य	डॉ. माऊसाहेब नवले	१३
७	'बस्स! बहुत हो चुका : डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर के विचारों के परिप्रेक्ष्य में'	प्रा. अजयकुमार कांबळे	१६
८	'यह तुम भी जानो' कविता – संग्रह में आम्बेडकरवादी चेतना	सचिन कांबळे	१९
९	हिंदी कवियों के काव्य में आम्बेडकर विचारधारा	प्रा. सौ. सुनिता सुर्यवंशी	२१
१०	समकालीन हिंदी कविता में आम्बेडकर दर्शन	प्रा. बहिरम देवेंद्र मगनभाई,	२३
११	सुशीला टाकभौरे की कविता में डॉ. बाबासाहब के क्रांतिकारी विचार	प्रा. महेश भोपळे,	२५
१२	डॉ. आंबेडकर की विचारधारा और हिंदी दलित कविता	प्रा. नंदू चव्हाण	२८
१३	डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर : विचारधारा और हिंदी कविता	डॉ. अशोक मरळे	३०
१४	डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर : विचारधारा और हिंदी कविता	डॉ. जितेंद्र बनसोडे	३२
१५	'आग और आंदोलन' काव्यसंग्रह पर डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर के विचारों का प्रभाव	डॉ. वृषाली मिणचेकर	३४
१६	डॉ. बाबासाहब के विचारों की अभिव्यक्ति है दलित कविता	विश्वास पाटील	३६
१७	आम्बेडकरवादी हिंदी दलित कविता	प्रा. डॉ. संजय नाईनवाड	३८
१८	आंबेडकर विचारधारा का हिन्दी काव्य पर प्रभाव	प्रा. विश्वनाथ जंगीटवार	४०
१९	'मोहनदास नैमिशराय के काव्य में आम्बेडकरवादी विचार दर्शन'	रूकैय्या शेख	४२
२०	डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर : विचारधारा और हिंदी कविता	अन्सार शेख	४३
२१	डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर विचारधारा और हिंदी कविता	प्रा. विकास विधाते,	४५
२२	"डॉ.बाबासाहेब आम्बेडकर : विचारधारा और हिंदी कविता"	तेजस्विनी शितोळे	४७
२३	दलित गीतों में चित्रित डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर	विकास पाटील	४९
२४	सुशीला टाकभोरे के काव्य में आम्बेडकरी विचारधारा	डॉ. वर्षा गायकवाड	५१
२५	डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर : विचारधारा और हिंदी कविता	डॉ. बलवन्त जेऊरकर	५३
२६	डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर के विचार और हिंदी कविता	प्रा. रगडे पी. आर.	५५
२७	हिंदी काव्य में अभिव्यक्त डह. बाबासाहब आम्बेडकर के विचार	डॉ. दीपक तुपे	५७
२८	आम्बेडकर विचारधारा से प्रेरित आधुनिक हिंदी कविता	प्रा.डॉ.सौ. सविता नाईक-निंबाळकर	५९
२९	डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर विचारधारा और हिंदी दलित कविता	प्रा. डॉ. पंडित बन्ने	६१
३०	डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर : विचारधारा और हिंदी कविता	प्रा. डॉ. एम. ए. येल्लुरे	६३
३१	'मेरी इतनी-सी बात सुनो' कविता संग्रह में चित्रित आम्बेडकरी विचारधारा	प्रा. गोरख बनसोडे	६५
३२	डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर : विचारधारा और 'शबरी' खंडकाव्य	सौ. वैशाली शिंदे	६७
33	आम्बेडकरी विचार, और हिंदी काव्य साहित्य	डॉ. शाहीन पटेल	६९
३४	आम्बेडकर के विचारों के परिप्रेक्ष में 'जूठन' आत्मकथा	डॉ. गिरीश चन्द्र पाल	७०
३५	हिंदी आत्मकथा साहित्य और डॉ. आम्बेडकर	डॉ. युनूस ए. गाहा	७३
३६	डॉ. आम्बेडकर के विचारों से प्रभावित आत्मकथा का मूल्यांकन	डॉ. शहाजहान मणेर	७५
३७	दलित आत्मकथाओं में चित्रित डॉ. आम्बेडकर के शैक्षिक विचार	डॉ. साताप्पा सावंत	७७
३८	'जीवन हमारा' आत्मकथा में आम्बेडकरवादी चेतना	मुदनर दत्ता सर्जेराव	८०
३९	दलित आत्मकथाओं में आम्बेडकरी विचार प्रवाह	प्रा. अर्जुन पवार	८२

 ISBN : 978-93-83796-45-8

समकालीन हिंदी कविता में आंबेडकर दर्शन

प्रा. बहिरम देवेंद्र मगनभाई, श्रीगोंदा

समकालीन हिंदी कविता के संबोध्यों पर अगर ध्यान से दृष्टि डालें तो एकरूपता की जगह विविधता का संसार हमारे सामने नजर आएगा। जिससे कविता में संभावना के अनेक द्वार खुलते दिखाई दे रहे हैं। कविता और सहृदय के बीच एक आत्मीय संबंध की स्थापना भी हो जाती है। यहां पर विषय की कोई प्रमुखता नहीं रहती है, कविता सीधा जनमानस के बीच खड़े होकर बात शुरु करते हैं, मनुष्य को जीवन के बीच खड़ा कर देती है तथा उसको कविता के माध्यम से बेहतर जिन्दगी जीने के लिए प्रेरित भी करवाती है। जीवन-चित्रण के दौरान कवि अपने समय और समाज के बहुआयामी यथार्थ का परिचय कराने का प्रयास करती है। हिंदी कविता पर बौध्द, कबीर, गांधी, मार्क्स, अरविंद आदि के दर्शन का प्रभाव हैं। लेकिन वैचारिक दर्शन की मिमांसा करें तो यह कहना होगा की, स्वतंत्रता के बाद किसी भारतीय जननायक का प्रभाव सर्वाधिक होगा तो वे डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर हैं। समकालीन दलित काव्य का विकास तीव्र गति से हो रहा है। समकालीन हिंदी कविता में दलित विमर्श को समृद्ध करनेवाले कवियों में ओमप्रकाश वाल्मीकि, जयप्रकाश कर्दम, मनोज सोनकर, निर्मला पुतुल, सूरजपाल चौहान, मोहनदास नैमिशराय आदि सशक्त हस्ताक्षर है। समकालीन दलित कविता में षडयंत्रकारी ब्राम्हणवादी सामाजिक व्यवस्था के विरुद्ध नकार और बहिष्कार की नीति का स्वर प्रमुख है। यह स्वर मूल में डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर के जीवन संघर्ष से प्राप्त हुआ है।

डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर ने दलित एवं उपेक्षित वर्ग को अस्मिता, स्वाभिमान एवं अस्तित्व की पहचान दिलाई है। समानता और सामूहिकता का मंत्र डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर ने जब दलित वर्ग को दिया तब विद्रोह और संघर्ष का मंत्र भी दिया। समकालीन दलित कविता में षडयंत्रकारी ब्राम्हणवादी सामाजिक व्यवस्था के विरुद्ध नकार और बहिष्कार की नीति का स्वर प्रमुख है। जयप्रकाश कर्दम प्रस्थापित व्यवस्था के प्रति आवाज उठाते हुए कहते है,

"यदी यही रहा मेरे/दमन और शोषण का हाल,
तो आज नहीं तो कल/हरकत में जरुर आएँगे/ मेरे हाथ।"[1]

इस प्रकार हरकत में आने की प्रेरणा बाबासाहब की दी हुई हैं। इसलिए कृष्णदत्त पालीवाल कहते है, "दलित समस्याँ आर्थिक समस्याँ नहीं है -मूलतः वह सामाजिक व्यवस्थासे उत्पन्न जटिल समस्याँ है - जिसका मूलाधार जाति-व्यवस्था पर केंद्रित हैं।"[2] यही सामाजिक बिमारी डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर समज गये थे । इसी कारण उन्होंने संवर्ण समाज के विचारों के खिलाफ यल्गाार किया। समाज में फैली असमानता, अन्याय, जातिभेद, शोषण के खिलाफ दलित कवियों का स्वर तीव्र रहा हैं जिसमें फुले, शाहू, अम्बेडकर आदि सुधारकों की विचारधारा में दलित मुक्ति का स्वर गूँज उठा। ओम प्रकाश वाल्मीकि दलित समाज को जगाते हुए एहसास दिलाते है कि,

"घृणा तुम्हें मार सकती है/तोड सकती है
पर अपने ही दायरे में/ जिन्दा नहीं रख सकती"[3]

दलित साहित्यकार हजारों सालों से हो रहे अन्याय का विरोध करते हुए समानता को स्थापित करना चाहते हैं समकालीन कविता में नकार का स्वर तेज हुआ है। नकार दो प्रकार का होता है- एक स्थान एवं स्थितियों को नकारना और दूसरा सामाजिक नकार। दलित एवं पिछडे समाज को जितना नकारा जाए, दबाया जाए वह उतना ही उठने की कोशिश कर रहा हैं यहि डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर की चेतना का प्रतिफलन हैं जयप्रकाश कदम इस संदर्भ में कहते है,

"हिन्दुत्व राज्य की नगरी में/किन्तु मेरा घर द्वारा कहाँ है?
तुम चाहो राम राज्य आए;/तुम श्रेष्ठ, शूद्र मैं बना रहूँ।"[4]

इस प्रकार स्पष्ट होता है युग बदलने से दलित अन्यायों में ज्यादा परिवर्तन नहीं आया । यह भारत देश की सबसे बड़ी विडम्बना है। समकालीन कविता का दलित विमर्श हमें समतामूलक समाज की स्थापना हेतु प्रवाहमयी उर्जा प्रदान करता है तथा दलित समाज को भी आत्मपरिक्षण करने के लिए भी प्रेरणा देता हैं समाज में फैली हुई है। अंधश्रद्धा, स्वंय के प्रति अविश्वास का स्वर दृढ़ करने की भावना जगाती है। तकनीकी विकास के कारण दलित समाज का असहमति, असंतोष और आक्रोश को प्रकट करने के विविध माध्यमों का निर्माण भी हो रहा हैं न्याय, शिक्षा, समानता तथा स्वतंत्रता आदि मौलिक अधिकारों को प्राप्त करने की जिजीविषा समकालीन कविता देती हैं।

समकालीन कविता में दलित जीवन का चित्रण अम्बेडकर प्रणित धर्म निरपेक्ष समाजवाद की मॉग करता है तथा आर्थिक, सामाजिक विषमता का विनाश करने की मॉग करता है। इसी के साथ पारंपारिक समीक्षा पद्धति को बदलने की मॉग दलित कविता करती है और दलित साहित्य के सौन्दर्यवादी चेतना को विकसित करना चाहता है। समकालीन कवि आधुनिक